Shri Mahakal Bhairav Mantra Sadhana

श्रीमहाकाल भैरवमंत्र साधना

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

भैरव शब्द का संक्षिप्त भावार्थ– जिससे क्लेश भयभीत रहता है, जिसके भय से वायु चलती है, सूर्य तपता है, इन्द्र जल वृष्टि करता है, लोकपाल भयभीत होते हैं, जो विश्व का भरण–पोषणकर्ता और संहारकर्ता है तथा जो महाभयंकर शब्दकारी है, उसका नाम भैरव है।

भैरव और रुद्र, महाकाल शिव के ही कल्याणकारक एवं भयंकर स्वरूप हैं। वेदों में इन्हें 'रुद्र' तथा तंत्रशास्त्रों में 'भैरव' कहा गया है। साधना में सफलता हेतु आरम्भ में भैरवजी का ध्यान एवं पूजन करने का निर्देश तंत्रशास्त्रों में है। इसके अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से इनके तंत्रोक्त प्रयोग सम्पन्न कर, षटकर्मों और चारों पुरुषार्थों को सिद्ध किया जा सकता है। भैरवजी का विशिष्ट साधक वेताल, यक्षिणी, योगिनी, प्रेत आदि दुर्लभ शक्तियों को शीघ्र ही अपने अधिकार में कर लेता है। शिवपुराण में लिखा है– 'भैरव पूर्णरूपाम् हि शंकरस्य परमात्मनः।' भैरवजी की उपासना शीघ्रफलप्रदाता है, परन्तु सही विधि और उत्तम आचरण से। रविवार, शनिवार, सोमवार, चतुर्दशी, शिवरात्रि,

महारात्रि, कालाष्टमी अथवा पर्वकाल में इनकी साधनारम्भ कर सकते हैं। पूजनारम्भ में आवश्यक सामग्रियों से भगवान् भैरव और श्रीकालिका का पूजन करें तथा पूजनान्त में नित्य सात्विक बलि प्रदान कर दीपदान अर्पित करें। शक्तिसंगमतंत्र के काली खण्ड में बटुक भैरव तथा स्कन्धपुराण के काशीखण्ड में कालभैरव की उत्पत्ति का भव्य वर्णन मिलता है।

साधना में सफलता क्यों नहीं मिलती– मंत्र को जाग्रत करने के लिये कुछ आवश्यक नियम और संस्कार होते हैं। जिनकों धारण किये बिना साधक की साधना फलीभूत नहीं होती। मंत्र साधना के 16 प्रमुख संस्कार इस प्रकार हैं–

‘‘भक्ति, आसन, पंचाग सेवन, आचार, धारण, दिव्य देश सेवन, प्राण क्रिया, मुद्रा, तर्पण, हवन, बलि, योग, जप, ध्यान, समाधि और दृढ़ आस्था।’’ इन संस्कारों से शुद्ध सिद्ध होकर मंत्र करने वाला जापक अवश्य सिद्धि प्राप्त करता है। इन संस्कारों को ग्रहण करने के लिये परम गुरु की नितान्त आवश्यकता होती है।

तंत्रभैरवों में ‘अष्टभैरव’ सुप्रसिद्ध है, जिनकी पूजा उनकी शक्तियों के साथ समस्त पूजाकार्यों में करनी चाहिये।

भैरव	–	शक्ति
असितांग	–	ब्राह्मी
रुरु	–	माहेश्वरी
चण्ड	–	कौमारी
क्रोध	–	वैष्णवी
उन्मत्त	–	वाराही
कपाल	–	इन्द्राणी
भीषण	–	चामुण्डा
संहार	–	महालक्ष्मी

शंकराचार्यजी ने प्रपंचसारतंत्र में अष्टभैरवों का उल्लेख इस प्रकार किया है– भीषण, कालराज, संहार, रुरु, उन्मत्त, क्रोध, चण्डकपाल, भूतनाथ।

सप्तविशंति रहस्यम् में– श्रीमन्थान भैरव, फट्कार भैरव, षट्चक्र भैरव, एकात्म भैरव, हविर्भक्ष्य भैरव, चण्ड भैरव, भ्रमर भास्कर भैरव का उल्लेख है।

इसके अतिरिक्त दस वीर भैरवों के नाम इस प्रकार हैं- सृष्टिवीर भैरव, स्थितिवीर भैरव, संहारवीर भैरव, रक्तवीर भैरव, यमवीर भैरव, मृत्युवीर भैरव, भद्रवीर भैरव, परमार्कवीर भैरव, मार्त्तण्डवीर भैरव, कालाग्निरुद्रवीर भैरव।

तीन बटुक भैरवों के नाम- स्कन्द-बटुक, चित्र-बटुक, विरंचि-बटुक है। रुद्रयामलतंत्र में 64 भैरवों के नाम इस प्रकार है-

असितांग, विशालाक्ष, मार्त्तण्ड, मोदकप्रिय, स्वच्छन्द, विघ्नसंतुष्ट, खेचर, सचराचर, रुरु, कोडदंष्ट्र, जटाधर, विश्वरूप, विरूपाक्ष, नानारूपधर, पर, वज्रहस्त, महाकाय, चण्ड, प्रलयान्तक, भूमिकम्प, नीलकण्ठ, विष्णु, कुलपालक, मुण्डपाल, कामपाल, क्रोध, पिंगलेक्षण, अभ्ररूप, धरापाल, कुटिल, मंत्रनायक, रुद्र, पितामह, उन्मत्त, बटुनायक, शंकर, भूतवेताल, त्रिनेत्र, त्रिपुरान्तक, वरद, पर्वतावास, कपाल, शशिभूषण, हस्तिचर्माम्बरधर, योगीश, ब्रह्मराक्षस, सर्वज्ञ, सर्वदेवेश, सर्वभूतहृदिस्थिता, भीषण, भयहर, सर्वज्ञ, कालाग्नि, महारौद्र, दक्षिण, मुखर, अस्थिर, संहार, अतिरिक्तांग, कालाग्नि, प्रियंकर, घोरनाद, विशालाक्ष, दक्ष संस्थित योगीश।

महाविद्याओं की सिद्धि उनके भैरवों अर्थात् अंगदेवताओं के बिना असम्भव है। परारहस्यानुसार- जो शक्ति साधक बिना शिवमंत्र के अभाव में शक्तिमंत्र का जप करता है उसे कोटि जन्मों तक सिद्धि प्राप्त नहीं होती। उद्दण्डभैरवानुसार महाविद्याओं के भैरवों के नाम इस प्रकार हैं-

कालिका- महाकाल।। तारिणी- अक्षोभ्य भैरव।। त्रिपुरा- कामेश्वर भैरव।। बगलामुखी- त्र्यम्बक भैरव।। मातंगी- महेश (मतंग) भैरव।। भुवनेश्वरी- महेश्वर भैरव।। कमला- नारायण भैरव।। छिन्नमस्ता- कराल भैरव।। भैरवी- कुक्कुटेश्वर भैरव।। धूमावती- अघोर भैरव।।

प्रत्येक तांत्रिक कर्म में दीपक के रूप में भैरवजी का पूजन करना आवश्यक होता है।

ध्यानश्लोका- तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम्। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

भावार्थ- अत्यन्त तीखे दांत, विशालकाय, महाप्रलयकालाग्नि तुल्य हे भैरव! आपको नमस्कार है, आप मुझे कार्य करने की अनुमति प्रदान करें।

श्रीमहाकाल भैरव मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमहाकाल भैरवमंत्रस्य विराट् छन्दः, श्रीमहाकालदेवता, हूं बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, श्रीमहाकालभैरव प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ह्रां ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ह्रीं ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

हूं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ह्रैं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

ह्रौं ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ह्रः ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- कोटि कालानलाभासं, चतुर्भुजं त्रिलोचनं। श्मशानाष्टक मध्यस्थं, मुण्डाष्टक विभूषितम्।।

पंचप्रेत स्थितं देवं, त्रिशूलं डमरुं तथा। खड्गं च खर्परं चैव, वाम दक्षिण योगतः।।

विभ्रतं सुन्दरं देहं, श्मशान भस्म भूषितम्। नानाशबैः क्रीडमानं, कालिका हृदय स्थितम्।।

लालयन्तं रतासक्तं, घोरचुम्बन तत्परम्। गृध गोमायु संयुक्तं, फेरवीगण संयुतम्।।

जटापटल शोभाढ्यं, सर्वशून्यालय स्थितम्। सर्वशून्य मुण्ड भूषं, प्रसन्नवदनं शिवम्।।

मंत्र-1- 'हूं हूं महाकाल प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

2- 'ॐ महाकालाय नमः।'

3- 'ॐ हौं महाकालेश्वराय नमः।

4- 'ह्रीं ह्रीं हूं महाकाल ह्रीं ह्रीं हूं।'

5- 'ॐ ऐं महाकालाय हूं ठः ठः ह्रीं ॐ महाकालाय स्वाहा।'

6- 'ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय-मारय पोथय-पोथय हुं फट् स्वाहा।' शत्रुमारण के लिये इस मारक मंत्र को प्रयोग किया जाता है।

महाकाल के महामन्त्रों के विधिपूर्वक अनुष्ठान से काल के समान दुःख, शत्रुओं और व्याधियों का तत्काल विनाश हो जाता है। रोग, शोक, भय, दुर्भाग्य एवं प्रभावी तंत्रबन्धन क्षणभर में स्वाहा हो जाते हैं। कोई भी अनिष्टकारी शक्ति महाकाल के

उपासक के समक्ष उपस्थित नहीं हो सकती। साक्षात् काल भी इनके विशिष्ट साधक का अहित नहीं कर सकता, मनुष्य की तो बात ही क्या। महाकाल भैरव की साधना प्रचण्ड अग्नि के समान महातेजस्वी एवं अत्यन्त उग्र है। यह साधना अति विशिष्ट, गोपनीय, दुर्लभ एवं गुरुगम्य है। अतः इनके महामन्त्रों का अनुष्ठान केवल सुयोग्य गुरु के मार्गदर्शन ही करना निर्दिष्ट है, साधारणजन इस साधना से विरक्त रहें। गुरुमुख से पूजन विधि प्राप्त कर साधना में अग्रसर होवें।

श्रीमहाकाल भैरव कवचम्- इस अद्भुत कवच का त्रिकाल संध्या पाठ करने से मनुष्य स्वयं महाकाल द्वारा सुरक्षा, अतुलित बल, पराक्रम एवं तेज प्राप्त करता है।

श्रीदेव्युवाच- देव देव महाबाहो भक्तानां सुखवर्द्धन। केन सिद्धिं ददात्याशु कलौ त्रैलोक्य मोहन।। तन्मे वद दयाधार साधकाभीष्ट सिद्धये। कृपां कुरु जगन्नाथ वद देव विदाम्बर।।

श्रीभैरव उवाच- गोपनीयं प्रयत्नेन तत्वात्तत्वं परात्परम्। एष सिद्धिकरः सम्यक् किमथो कथयाम्यहम्।।

महाकालमहं वन्दे सर्वसिद्धि प्रदायकम्। देव दानव गन्धर्व किन्नरैः परिसेवितम्।।

कवचं तत्वदेवस्य पठनाद् घोर दर्शने। सत्यं भवति सान्निध्यं कवचस्तदनन्तरम्।।

सिद्धिं ददाति संतुष्टा कृत्वा कवचमुत्तमम्। साम्राज्यत्वं प्रियं दत्त्वा पुत्रवत् परिपालयेत्।।

कवचस्य ऋषिर्देवी कालिका दक्षिणा तथा। विराट् छन्दः सुविज्ञेयं महाकालस्तु देवता।।

कालिका साधने चैव विनियोगः प्रकीर्तितः। ॐ श्मशानस्थो महारुद्रो महाकालो दिगम्बरः।।

कपाल कर्तृका वामे शूलं खट्वांग दक्षिणे। भुजंग भूषिते देवि भस्मास्थि मणिमण्डितः।।

ज्वलत्पावक मध्यस्थो भस्मशय्या व्यवस्थितः। विपरित रतां तत्र कालिका हृदयोपरि।।

पेयं खाद्यं चोष्यं च तौ कृत्वा तु परस्परम्। एवं भक्त्या यजेद्देवं सर्वसिद्धि प्रजायते।।

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य महाकालाय तत्पदम्। नमः पातु महामंत्रः सर्वशास्त्रार्थ पारगः।।

अष्टाक्षरो महामंत्रः सर्वाशास्त्रार्थ परिपूरकः। सर्वपापं क्षयं यान्ति ग्रहणं भक्त वत्सले।।

कूर्च द्वन्द्वं महाकाल प्रसीदेति पदद्वयम्। लज्जायुग्मं वह्निजाया स तु राजेश्वरो महान्।।

मंत्रग्रहण मात्रेण भवेत्सत्यं महाकविः। गद्य पद्यमयीवाणी गंगा निर्झरिता तथा।।

तस्य नामतु देवेशि देवाः गायन्ति भावुकाः। शक्तिबीज द्वयं दत्त्वा कूर्च स्यात्तदनन्तरम्।।

महाकालपदं दत्त्वा मायाबीज युगं तथा। कूर्चमेकं समुद्धृत्य महामंत्रो दशाक्षरः।।

राजस्थाने दुर्गमे च पातु मां सर्वतो मुदा। वेदादि बीजमादाय भगमान्तदनन्तरम्।।

महाकालाय सम्प्रोच्य कूर्चं दत्त्वा च ठद्वयम्। ह्रींकार पूर्वमुद्धृत्य वेदादिस्तदनन्तरम्।।

महाकालस्यान्त भागे स्वाहान्तमनुमुत्तमम्। धनं पुत्रं सदा पातु बन्धुदारा निकेतनम्।।

पिंगलाक्षो मंजु युद्धे युद्धे नित्यं जयप्रदः। सम्भाव्यः सर्वदुष्टघ्नः पातु स्वस्थान वल्लभः।।

इति ते कथितं तुभ्यं देवानामपि दुर्लभम्। अनेन पठनाद् देवी विघ्ननाशो यथा भवेत्।।

सम्पूजकः शुचिस्नातः भक्तियुक्तः समाहितः। सर्वव्याधि विनिर्मुक्तः वैरिमध्ये विशेषतः।।

महाभीमः सदापातु सर्वस्थान वल्लभम्। काली पार्श्वस्थितो देवः सर्वदा पास्तु मे मुखे।।

पठनात् कालिका देवि पठेत् कवचमुत्तमम्। श्रृणुयाद्वा प्रयत्नेन सदानन्दमयो भवेत्।।

श्रद्धयाऽश्रद्धयावापि पठनात् कवचस्य यत्। सर्वसिद्धिमवाप्नोति यदयन्मनसि रोचते।।

बिल्वमूले पठेद्यस्तु पठनात्कवचस्य यत्। त्रिसंध्यं पठनाद् देवि भवेन्नित्यं महाकविः।।

कुमारीं पूजयित्वा तु यः पठेद् भावतत्परः। न किंचिद् दुर्लभं तस्य दिवि वा भुवि मोदते।।

दुर्भिक्षे राजपीडायां ग्रामे वा वैरिमध्यके। यत्र यत्र भयं प्राप्तः सर्वत्र प्रपठेन्नरः।।

तत्रतत्राभयं तस्य भवत्येव न संशयः। वामपार्श्वे समानीय शोभितां वर कामिनीम्।।

श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि पठनात्कवचस्य तु। प्रयत्नतः पठेद्यस्तु तस्य सिद्धिः करेस्थितः।।

इदं कवचमज्ञात्वा काल (कार्ली) यो भजेत नरः। नैव सिद्धिर्भवेत्तस्य विघ्नस्तस्य पदे पदे। आदौ वर्म पठित्वा तु तस्य सिद्धिर्भविष्यति।

श्रीमहाकालभैरव स्तोत्रम्- ॐ महाकालाय महाकाय, महाकाल जगत्पते। महाकाल महायोगिन्, महाकाल नमोऽस्तुते।।

महाकाल महादेव, महाकाल महाप्रभो। महाकाल महारुद्र, महाकाल नमोऽस्तुते।।

महाकाल महाज्ञान, महाकाल तमोऽपहन्। महाकाल महाकाल, महाकाल नमोऽस्तुते।।

भवाय च नमस्तुभ्यं, शर्वाय च नमो नमः। रुद्राय च नमुस्तभ्यं, पशूनां पतये नमः।।

उग्राय च नमस्तुभ्यं, महादेवाय वै नमः। भीमाय च नमस्तुभ्यमीशानाय नमो नमः।।

ईश्वराय नमस्तुभ्यं, तत्पुरुषाय वै नमः। सद्योजाता नमस्तुभ्यं, शुक्लवर्णा नमो नमः।।

अधः कालाग्नि रुद्राय, रुद्ररूपाय वै नमः। स्थित्युत्पत्ति लयानां च हेतु रूपाय वै नमः।।

परमेश्वर रूपस्तवं नीलकण्ठ नमोऽस्तुते। पवनाय नमस्तुभ्यं, हुताशन नमोऽस्तुते।।

सोमरूप नमस्तुभ्यं, सूर्यरूप नमोऽस्तुते। यजमान नमस्तुभ्यमाकाशाय नमो नमः।।

सर्वरूप नमस्तुभ्यं, विश्वरूप नमोऽस्तुते। ब्रह्मरूप नमस्तुभ्यं, विष्णुरूप नमोऽस्तुते।।

रुद्ररूप नमस्तुभ्यं, महाकाल नमोऽस्तुते। स्थावराय नमस्तुभ्यं, जंगमाय नमो नमः।।

नमः उभय रूपाभ्यां, शाश्वताय नमो नमः। हुं हुंकार! नमस्तुभ्यं, निष्कलाय नमो नमः।।

अनाद्यन्त महाकाल, निर्गुणाय नमो नमः। सच्चिदानन्दरूपाय, महाकालाय ते नमः।।

प्रसीद मे नमो नित्यं, मेघवर्ण! नमोऽस्तुते। प्रसीद मे महेशान, दिग्वासाय नमो नमः।।

ॐ ह्रीं मायास्वरूपाय, सच्चिदानन्द तेजसे। स्वाहा सम्पूर्णमंत्राय, सोऽहं हंसाय ते नमः।।

फलश्रुति- इत्येवं देव देवस्य, महाकालज्ञय भैरवि!। कीर्तितं पूजनं सम्यक्, साधकानां सुखावहम्।।

श्रीमहाकाल ककाराद्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्- कैलास शिखरे रम्ये, सुखसीनं जगद्गुरुं। प्रणम्य परया भक्त्या, पार्वती परिपृच्छति।।

श्रीपार्वत्युवाच- त्वतः श्रुतं पुरा देव, भैरवस्य महात्मनः। नाम्नामष्टोत्तरं शतं, ककरादिमभीष्टदम्।। गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं, सर्वाभीष्टार्थ साधकम्। तन्मे वदस्व देवेश! यद्यहं तव वल्लभा।।

श्रीशिवोवाच- लक्षवार सहस्राणि, वारिताऽसि पुनः पुनः। स्त्री स्वभावान्महा देवि! पुनस्तत्वं त्वं पृच्छसि।।

रहस्याति रहस्यं च, गोप्याद् गोप्यं महत्तरम्। तत्ते वक्ष्यामि देवेशि! स्नेहात्तव शुचिस्मिते।।

कूर्चयुग्मं महाकाल, प्रसीदेति पदद्वयम्। लज्जायुग्मं वह्निजाया, राजराजेश्वरो महान्।।

मंत्र- 'हूं हूं महाकाल! प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा।' मंत्रग्रहण मात्रेण, भवेत्सत्यं महाकविः। गद्य-पद्य मयी वाणी, गंगा निर्झरणी यथा।।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीराजराजेश्वर श्रीमहाकाल ककाराद्यष्टोत्तर शतनाम माला मंत्रस्य श्रीदक्षिणा कालिका ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीमहाकालः देवता, हूं बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, सर्वार्थ साधने पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीदक्षिणा कालिका ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहाकाल देवतायै नमः हृदि। हूं बीजाय

नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयो। स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ह्रां ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ह्रीं ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ह्रूं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ह्रैं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

ह्रौं ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ह्रः ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- कोटि कालानलाभासं, चतुर्भुजं त्रिलोचनं। श्मशानाष्टक मध्यस्थं, मुण्डाष्टक विभूषितम्।।

पंचप्रेत स्थितं देवं, त्रिशूलं डमरुं तथा। खड्गं च खर्परं चैव, वाम दक्षिण योगतः।।

विभ्रतं सुन्दरं देहं, श्मशान भस्म भूषितम्। नानाशबैः क्रीडमानं, कालिका हृदय स्थितम्।।

लालयन्तं रतासक्तं, घोरचुम्बन तत्परम्। गृध गोमायु संयुक्तं, फेरवीगण संयुतम्।।

जटापटल शोभाढ्यं, सर्वशून्यालय स्थितम्। सर्वशून्य मुण्ड भूषं, प्रसन्नवदनं शिवम्।।

स्तोत्रम्- ॐ कूं कूं कूं कूं शब्दरतः, क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं परायणः। कविकण्ठ स्थितः कै ह्रीं, हूं कं कं कवि पूर्णदः।।

कपाल कज्जल समः, कज्जल प्रिय तोषणः। कपालमालाऽऽभरणः, कपालकर भूषणः।।

कपाल पात्र संतुष्टः, कपालार्घ्य परायणः। कदम्ब पुष्पसम्पूज्यः, कदम्ब पुष्प होमदः।।

कुलप्रियः कुलधरः, कुलाधारः कुलेश्वरः। कौलव्रतधरः कर्म, कामकेलि प्रियः क्रतु।।

कलह ह्रीं मंत्रवर्णः, कलह ह्रीं स्वरूपिणः। कंकाल भैरवो देवः, कंकाल भैरवेश्वरः।।

कादम्बरी पानरतः, तथा कादम्बरीकलः। कराल भैरवानन्दः, कराल भैरवेश्वरः।।

करालः कलनाधारः, कपर्दीश वरप्रदः। करवीर प्रिय प्राणः, करवीर प्रपूजनः।।

कलाधारः कालकण्ठः, कूटस्थः कोटराश्रयः। करुणः करुणावासः, कौतुकी कालिका पतिः।।

कठिनः कोमलः कर्णः, कृत्तिवास कलेवरः। कलानिधिः कीर्तिनाथः, कामेन हृदयंगम्।।

कृष्णः काशीपतिः कौलः, कूलचूडामणिः कुलः। कालांजन समाकारः, कालांजन निवासिनः।।

कौपीनधारी कैवर्तः, कृतवीर्यः कपिध्वजः। कामरूपः कामगतिः, कामयोग परायणः।।

काम सम्मर्दनरतः, कामगेह निवासिनः। कालिका रमणः कालिनायकः कालिकाप्रियः।।

कालीशः कालिकाकान्तः, कल्पद्रुमलतामतः। कुलटालाप मध्यस्थः, कुलटासंग तोषितः।।

कुलटाचुम्बनोद्युक्तः, कुलटाकुच मर्दनः। केरलाचार निपुणः, केरलेन्द्र ग्रहस्थितः।।

कस्तूरी तिलकानन्दः, कस्तूरी तिलकप्रियः। कस्तूरी होमसंतुष्टः, कस्तूरी तर्पणोद्यतः।।

कस्तूरी मार्जनोद्युक्तः, कस्तूरी कुण्डमज्जनः। कामिनी पुष्पनिलयः, कामिनी पुष्पभूषणः।।

कामिनी कुण्ड संलग्नः, कामिनी कुण्ड मध्यगः। कामिनी मानसाराध्यः, कामिनी मान तोषितः।।

काममंजीर रणितः, कामदेव प्रियातुरः। कर्पूरामोद रुचिरः, कर्पूरामोदधारिणः।।

कर्पूरमालाऽऽभरणः, कूर्परार्णव मध्यगः। क्रकसः क्रकसाराध्यः, कलाप पुष्परूपिणः।।

कुशलः कुशलाकर्णी, कुक्कुरासंग तोषितः। कुक्कुरालय मध्यस्थः, काश्मीर करवीरभृतः।।

कूटस्थः क्रूरः दृष्टिश्च, केशवासक्त मानसः। कुम्भीनस विभूषाढ्यः, कुम्भीनस वधोद्यतः।।

फलश्रुति- नाम्नामष्टोत्तर शतं, स्तुत्वा महाकाल देवम्। ककारादि जगद्वन्द्यं, गोपनीयं प्रयत्नतः।।

य इदं पठते प्राप्तः, त्रिसन्ध्यं वा पठेन्नरः। वांछितं समवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा।

लभते ह्यचलां लक्ष्मीं, देवानामपि दुर्लभाम्। पूजाकाले जपान्ते च, पठनीयं विशेषतः।।

यः पठेत्साधकाधीशः, काली रूपो हि वर्षतः। पठेद्वा पाठ्येद्वापि, श्रृणोति श्रावयेदपि।।

वाचकं तोषयेद्वापि, स भवेद् भैरवी तनुः। पश्चिमाभि मुखं लिंगं, वृषशून्यं शिवालयम्।।

तत्र स्थित्वा पठेन्नाम्नां, सर्वकामाप्तये शिवे। भौमवारे निथिशं च, अष्टमयां वा निशामुखे।।

माषभक्त बलिं छागं, कृसरान्नं च पायसं। मद्यं मीनं शोणितं च, दुग्धं मुद्रागुडार्द्रकम्।।

बलिं दत्वा पठेत्तत्र, कुबेरादधिको भवेत्। पुरश्चरणमेतस्य, सहस्रावृत्तिरुच्यते।।

महाकालसमो भूत्वा, यः पठेन्निशि निर्भयः। सर्वं हस्तगतं भूयान्नात्र कार्या विचारणा।।

मुक्तकेशो दिशावासः, ताम्बूल पूरिताननः। कुजवारे मध्यरात्रौ, होमं कृत्वा श्मशानके।।

पृथ्वीशाकर्षणं कृत्वा, नात्र कार्या विचारणा। ब्रह्माण्ड गोले देवेशि! या काचिज्जगती तले।।

समस्ता सिद्धयो देवि! वाचकस्य करे स्थिता। भस्माभिमंत्रितं कृत्वा, ग्रहस्ते विलेपयेत्।।

भस्म संलेपनाद् देवि! सर्वग्रह विनाशनम्। बन्ध्या पुत्रप्रदं देवि! नात्र कार्या विचारणा।।

गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीयं प्रयत्नतः। स्वयोनिरिव गोप्तव्यं, न देयं यस्य कस्यचित्।।

भगवान् बटुक भैरव शाबर मंत्र- "ह्रीं बटुक भैरव बालक केश, भगवान् वेश, सब आपद को कालभक्त जनहट को पाल, करधरे शिरकपाल दूजे करवाल, त्रिशक्ति देवी को बाल, भक्तजन मानस को भाल, तेंतीस कोटि मंत्र को जाल, प्रत्यक्ष बटुक भैरव जानिये। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

ग्रहणकाल, विजयदशमी, होली, शिवरात्रि या दीपावली की रात को भैरवजी को उड़द के बड़ों का नैवेद्य एवं गुग्गल की धूप अर्पित करते हुए एक हजार जप करें। अन्त में 108 दीपक प्रज्जवलित कर अर्पित करें। इस विधि से मंत्र सिद्ध होता है।

इसके प्रभाव से शत्रुदोष, तंत्रदोष, ग्रहपीड़ा आदि का निवारण होता है एवं भैरवजी प्रसन्न होते हैं।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana